❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्।
सामवेद 1325
हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें। O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 43, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 नवम्बर, 2019 से रविवार 1 दिसम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न : पारित हुए कई प्रस्ताव - लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

"स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण वर्ष" के रूप में मनाया जाएगा वर्ष 2020

रविवार 22 मार्च, 2020 को आयोजित होगा अधिकतम संख्या दिवस : आर्यसमाजें करें तैयारी

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने किया उत्साहवर्धन

संगठन की मजबूती के लिए प्रत्येक स्तर पर गोष्ठियों एव चिन्तन शिविरों के होंगे अनेक आयोजन

बिना भवन की आर्यमाजों के निर्माण, प्रचारकों के प्रशिक्षण, नई पुस्तकों के प्रकाशन एवं आर्य विद्यालयों के विशाल संगम उत्सव के रूप में जाना जाएगा वर्ष 2020

2021 में होगा दिल्ली प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

अन्तरंग में पहली बार स्क्रीन पर सब पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं एवं सभा द्वारा संचालित योजनाओं का कराया गया परिचय

24 नवम्बर 2019 आर्य समाज 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक का शुभारंभ सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी महामंत्री, श्री विद्या मित्र ठुकराल जी कोषाध्यक्ष, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री शिवकुमार मदान जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्री सुखवीर सिंह जी, श्री वीरेंद्र सरदाना जी, श्री कृपाल सिंह जी इत्यादि महानुभावों के साथ-साथ दिल्ली की लगभग सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि, अधिकारी उपस्थित थे। सभा की अन्तरंग बैठक के दौरान उपस्थित आर्यजनों के उत्साह का उस समय ठिकाना न रहा जब पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी राज्यपाल सिक्किम का आगमन हुआ। इन दोनों महान हस्तियों का आर्यजनों ने खड़े होकर करतल ध्वनि से स्वागत किया। महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी ने श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का सिक्किम राज्य की ओर से राजकीय चिह्न देकर सम्मान किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के उत्थान और विस्तार हेतु कई महत्वपूर्ण तथ्यों पर विचार विमर्श किया गया और प्रस्ताव भी पारित किए गए।

1) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक की कार्यवाही प्रधान जी की आज्ञा से आरंभ करते हुए महामंत्री जी ने गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की और इस बीच की अवधि के दौरान दिवंगत आर्यजनों का पुण्य स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

2) इसके उपरांत 3 जनवरी 2019 से 24 नवम्बर 2019 तक दिल्ली सभा द्वारा आयोजित सेवा कार्यों एवं पर्वों के आयोजनों का क्रमशः वर्णन किया। जिसको सभी सभासदों ने स्वीकार किया।

3) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आय-व्यय का पूरा विवरण कोषाध्यक्ष श्री विद्या मित्र ठुकराल जी की ओर से सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने विस्तार से प्रस्तुत किया जिसको सभी सभासदों ने स्वीकार किया।

4) आर्य विद्या परिषद द्वारा समस्त आर्य विद्यालयों के 16000 हजार बच्चों की नैतिक शिक्षा की परीक्षा का उल्लेख किया गया।

5) भारत की राजधानी दिल्ली के उन तमाम आर्य समाजों को लेकर जो

- शेष पृष्ठ 4 पर

महाशय धर्मपाल जी को सिक्किम की राजभेंट प्रदान करते राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी

जे.एन.यू. में फीस का निर्णय एवं उसकी प्रतिक्रिया रूप विवाद

जे. एन. यू. में बवाल - खड़े किए कई संगीन सवाल

नई दिल्ली की जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी फीस विवाद गहराता जा रहा है। जहां कुछ लोग यूनिवर्सिटी को बंद करने की सलाह दे रहे हैं वहीं कई लोग इसकी फीस वृद्धि को गलत बता रहे हैं। तो कई लोग इस तर्क के आधार पर इसे सही बता रहे हैं कि केवल 10 रुपये में कोई कैसे हॉस्टल में रह सकता है। उनके तर्क के अनुसार अगर हॉस्टल फीस को 10 से बढ़ाकर 300 रुपये किया गया है तो इसमें इतनी हाय-तौबा मचाने की क्या जरूरत है? यह कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि कई सालों से हॉस्टल फीस में कोई वृद्धि नहीं हुई थी। जबकि छात्र हॉस्टल फीस में बढ़ोतरी के खिलाफ पिछले कई दिनों से प्रदर्शन कर रहे हैं।

पिछले दिनों जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में फीस की वृद्धि की गई थी जिसे अगले शैक्षणिक वर्ष से लागू करने का ऐलान किया गया है। उसमें जेएनयू के छात्रावासों में रहने वाले छात्रों के लिए फीस लगभग 27,600-32,000 रुपये वार्षिक से लगभग 55,000-61,000 रुपये वार्षिक तक होने का अनुमान है। हालांकि अब इसमें कुछ कटौती का ऐलान किया गया है।

इसी कशमकश का नतीजा है कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने एक बार फिर मीडिया के साथ ही आम लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। जेएनयू के छात्रों का संसद मार्च हुआ। यह मार्च

- शेष पृष्ठ 3 पर

.....असल में आज जेएनयू की बात आते है दिमाग में सबसे पहले चरित्रहीनता और राष्ट्रद्रोह की बातें तैरने लगती हैं। वर्षों तक अच्छी शिक्षा के लिए ख्याति बटोरने वाला जेएनयू आज लोगों की नजर में लाल सलाम, देशद्रोह का अड्डा बना हुआ है। तो इस बढ़ी फीस के विरोध में मार्च करने वाले छात्र लोगों की नजर में कोई खास महत्व नहीं रखते। लोगों को लगता है अगर फीस 300 से बढाकर तीन हजार भी कर दी जाये तो हमें इससे कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला। जेएनयू की ये छवि क्यों बनी इसके लिए मीडिया जिम्मेदार है या छात्र? इसकी तह में जाना आज बेहद जरूरी है .....

वेद-स्वाध्याय

परमप्रिया सच्चिदानन्दरूपिणी परमात्मा देवता

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया।। – अथर्व० 10/8/25
ऋषिः **कुत्सः**।। देवता – **आत्मा**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ – **एकम्** = एक **बालात्** = बाल से भी **अणीयस्कम्** = बहुत अधिक सूक्ष्म, अणु है **उत** = और **एकम्** = एक **न इव** = नहीं की भाँति **दृश्यते** = दीखता है। **ततः** = उससे परे **परिष्वजीयसी** = उसे आलिङ्गन किये हुए, उसे व्यापे हुए **देवता** = जो देवता है **सा** = वह **मम** = मुझे **प्रिया** = प्यारी है।

विनय – मुझमें प्रेमशक्ति किस प्रयोजन के लिए है? मेरे प्रेम का असली भाजन कौन है? यह खोजता हुआ जब मैं संसार को देखता हूँ तो इस संसार में केवल तीन तत्त्व ही पाता हूँ, तीन तत्त्वों में ही यह सब-कुछ समाया हुआ देखता हूँ। इनमें से पहला तत्त्व बाल से भी बहुत अधिक सूक्ष्म है। बाल के अग्रभाग के सैकड़ों टुकड़े करते जाएँ तो अन्त में जो अविभाज्य टुकड़ा बचे उस अणु, परम अणुरूप का यह तत्त्व है। प्रकृति के इन्हीं परमाणुओं से यह सब दृश्य जगत् बना है। इससे भी सूक्ष्म दूसरा तत्त्व है, पर इसकी सूक्ष्मता दूसरे प्रकार की है; इसकी सूक्ष्मता की किसी भौतिक वस्तु से तुलना नहीं की जा सकती। यह तत्त्व ऐसा अद्भुत है कि यह नहीं के बराबर है। यह है, किन्तु नहीं-जैसा है। इस दूसरे तत्त्व से परे और इससे सूक्ष्म और इसे सब ओर से आलिंगन किये हुए, व्यापे हुए, एक तीसरा तत्त्व है, तीसरी देवता है। यही देवता मुझे प्रिय है। पहली प्रकृति देवता जड़ और निरानन्द होने के कारण मुझे प्रिय नहीं हो सकती। दूसरी वस्तु मैं ही हूँ, मेरी आत्मा है। मैं तो स्वयं देखनेवाला हूँ, तो मैं कैसे दीखूँगा? अतः मैं नहीं के बराबर हूँ। मैं तो प्रेम करनेवाला हूँ, अतः प्रेम का विषय नहीं बन सकता। अतएव मेरे सिवाय मेरे सामने दो ही वस्तुएँ रह जाती हैं, यह प्रकृति और वह सच्चिदानन्दरूपिणी परमात्म-देवता। इनमें से चित्स्वरूप मुझे यह चैतन्य और आनन्द से शून्य प्रकृति कैसे प्रिय हो सकती है? मेरा प्यारा तो स्वभावतः वह दूसरा देवता है जोकि मेरी आत्मा की आत्मा है, जोकि मेरी आत्मा से परिष्वक्त हुआ इसमें सदा व्यापा हुआ है और जो मुझे आनन्द दे सकता है। मैं तो स्पष्ट देख रहा हूँ कि प्रकृति के समझे जानेवाले ये बड़े-से-बड़े ऐश्वर्य तथा प्रकृति के दिव्य-से-दिव्य भोग दे सकनेवाले ये अनगिनत पदार्थ सर्वथा आनन्द और ज्ञान-प्रकाश से शून्य हैं, अतः मैं तो प्रकृति से हटके अपने उस प्यारे परमात्मा की ओर दौड़ता हूँ। मैं स्पष्ट देखता हूँ कि अपने प्रेम द्वारा उसे पा लेने पर मेरी भटकती हुई प्रेम-शक्ति अपने प्रयोजन को पा लेगी, उसे पा लेने पर मेरा सम्पूर्ण प्रेम चरितार्थ और कृतकृत्य हो जाएगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सोशल मीडिया पर जारी ट्रेंड "भगवान कौन" के सम्बन्ध में

20 नवम्बर को भारत की सोशल मीडिया पर "भगवान कौन" नाम से एक ट्रेंड चल पड़ा। इस ट्रेंड में सबसे ज्यादा भक्त जेल में सजा काट रहे तथाकथित संत रामपाल के बताये गये। वेदों का नाम लेकर सभी भक्त भ्रामक पोस्ट डाल रहे थे कि वेदों में साफ-साफ लिखा है "उस पूर्ण परमात्मा का नाम कबीर है। और कबीर साहेब भी कहते हैं कि वेद मेरा भेद है, लेकिन मुझे पाने की विधि वेदों में नहीं है उसके लिए गीता में लिखा है कि तत्वदर्शी संत रामपाल ही उस परमात्मा को पाने की राह बतायेगा।"

कबीर या ईश्वर के कथित अवतार रामपाल के बारे में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने सुना न हो। कुछ की नजरों में वह आज भी संत है तो बड़ी संख्या में लोग उसे एक अपराधी के तौर पर जानते हैं। साल 2006 से 2008 के बीच वह जेल में रहा। बाद में बेल पर बाहर आ गया 2008 से 2010 के बीच सुनवाई में अदालत भी आता रहा लेकिन 2010 से 2014 के बीच पेश ही नहीं हुआ। आखिर 17 नवम्बर 2017 को कोर्ट ने उन्हें सजा सुना दी। कहा जाता है कोर्ट के फैसले वक्त जितने सैनिक चीन सीमा के पास डोकलाम में तैनात थे, उससे कहीं ज्यादा सैनिक हरियाणा पंजाब में उत्पात मचाने को आतुर रामपाल के भक्तों के लिए तैनात किए गये थे।

भक्तों को भी क्या कहा जाये यथा गुरु तथा चेले। देखा जाये तो भारत भूमि धर्म और यज्ञ की भूमि है। समय-समय पर ऋषि, मुनियों, महर्षियों ने जन्म लिया, जनसमुदाय को धर्म का ज्ञान दिया। समाज में रहने, ईश्वर की भक्ति और मुक्ति का मार्ग बताया। लेकिन इसमें भी कोई दोराय नहीं है कि यहाँ समय-समय विधर्मी और धर्म मार्ग से भटकाने वाले लोग भी जन्म लेते रहे है। वह जमाना लुप्त हो गया जब ऋषि-मुनि, साधु, संन्यासी घर-घर घूमकर लोगों को धर्म की शिक्षा देते थे। अचानक दुनिया में बड़ा बदलाव आया देश आधुनिक होने लगा और इस आधुनिक काल का लाभ उठाया आधुनिक बाबाओं ने। कोई इच्छाधारी बाबा सामने आया तो कोई कंप्यूटर बाबा कोई तिलकधारी बाबा बना, तो कोई निर्मल बाबा। कोई दयालु बाबा बना तो कोई कृपालु बाबा।

बाबाओं की इस आधुनिक फौज का एक हिस्सा बना संत रामपाल। जिसने कबीर को भगवान बनाया और खुद को उसका अवतार। चूँकि जैसा कि कबीर दास की जाति हिंदी साहित्य में जुलाहा पढाई जाती है तो इस कारण बहुत से लोग जातिगत रूप से कबीर से आस्था रखते थे। उन्हें अचानक एक ऐसा हाईप्रोफाइल बाबा मिला तो उनका मत मजबूत हुआ कि देखो हम ही नहीं इतना बड़ा बाबा भी कबीर को परमेश्वर मान रहा है। भक्तों की संख्या बढ़ी तो हरियाणा के करौंथा गाँव में एक सतलोक आश्रम का निर्माण भी कर दिया गया।

संख्या में इजाफा हुआ तो धीरे-धीरे कबीर ईश्वर और रामपाल स्वयंम्भू जगतगुरू बन गया। किन्तु जगतगुरू की अज्ञानता की हालत यह है कि उन्हें अपने गुरु का पूरा नाम और उसका अर्थ भी नहीं पता। क्योंकि कबीर का अरबी भाषा में अर्थ है बड़ा। और दास को हिंदी भाषा में गुलाम या सेवक कहा जाता है। इस कारण कबीर दास के नाम का अर्थ हुआ, 'बड़े का दास' अर्थात ईश्वर का दास। जो कबीर दास अपने दोहों में खुद को जिंदगी भर ईश्वर का दास बताते रहे, उनको लोगों ने परमेश्वर घोषित कर दिया। रामपाल और उसके अंधभक्त भी यही कर रहे हैं। जबकि कबीर दास खुद अपने दोहे में ईश्वर से प्रार्थना कर रहे है कि – ईश्वर इतना दीजिये जा मे कुटुम समाय, मैं भी भूखा न रहूं साधु भी भूखा न जाय। अब जिन्हें अपने गुरू के ही पूरे नाम का पता न हो, उन्हें ईश्वर वेद और उसकी भक्ति का क्या पता होगा, आप खुद समझ सकते हैं। कबीर दास एक दूसरे दोहे में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का नाम लेते हुए कहते है कि –

कबीर किसके दास – किसके परमेश्वर?

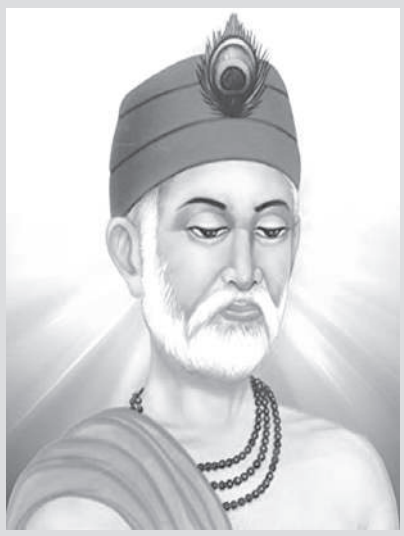

.... कबीर या ईश्वर के कथित अवतार रामपाल के बारे में शायद ही कोई ऐसा हो जिसनें सुना न हो। कुछ की नजरों में वह आज भी संत है तो बड़ी संख्या में लोग उसे एक अपराधी के तौर पर जानते हैं। साल 2006 से 2008 के बीच वह जेल में रहा। बाद में बेल पर बाहर आ गया 2008 से 2010 के बीच सुनवाई में अदालत भी आता रहा लेकिन 2010 से 2014 के बीच पेश ही नहीं हुआ। आखिर 17 नवम्बर 2017 को कोर्ट ने उन्हें सजा सुना दी। कहा जाता है कोर्ट के फैसले वक्त जितने सैनिक चीन सीमा के पास डोकलाम में तैनात थे, उससे कहीं ज्यादा सैनिक हरियाणा पंजाब में उत्पात मचाने को आतुर रामपाल के भक्तों के लिए तैनात किए गये थे। .....

कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाउँ।
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊँ।

मतलब राम के सामने कबीर दास जी अपनी हैसियत बताते हुए कहते हैं कि मेरे गले में राम की रस्सी बंधी है। वह जिधर खींचता है, मुझे उधर ही जाना पड़ता है अर्थात् अपने ऊपर मेरा स्वयं का अधिकार नहीं है बल्कि राम का है। लेकिन कबीर दास जी के इस दोहे के विपरीत रामपाल उसे ही परमेश्वर बनाने पर उतारू है।

देखा जाये तो भारत धर्म प्रधान देश है। सदियों पहले देश के लोग सीधे सादे थे तब के साधू संत भी सीधे सादे और साधारण हुआ करते थे। आज के दौर में जब देश तरक्की कर रहा है, देश में मध्यम वर्ग का तेजी से फैलाव हो रहा है ऐसे में शोपिंग मॉल संस्कृति के तरह बाबा संस्कृति का भी तेजी से विकास हुआ और धड़ाधड़ एक के बाद एक बाबा बाजार में आ रहे हैं और धर्म के नाम पर अपनी-अपनी दुकान बनाने में संलग्न हैं।

कोई स्वघोषित ईश्वर का अवतार बन गया, तो कोई समोसा खिलाकर भाग्य बदलने लगा। जब बाबाओं की कमाई और साम्राज्य देखें तो अन्य मजहबों के लोग भी हिन्दुओं की अज्ञानता का लाभ लेने दौड़ पड़े। कौन भूला होगा वह खबर जब यौन शोषण में गिरफ्तार हुए आशु महाराज का असली नाम आशिफ खान निकला था। लेकिन भक्त इतने अंधे होते है कि सच जानने के बावजूद भी इनकी आस्था इनसे नहीं डिगती। इस का नतीजा है कि यहाँ बाबा बनने बड़ा आसान मार्ग बन गया है। धर्म की शिक्षा व योग्यता या ज्ञान का भक्तो को यहाँ कोई मतलब नहीं, ये सब तुच्छ चीजें हैं। बाबा जितना बड़ा अज्ञानी होगा, भक्त उतना ही ज्यादा उसके दरबार में चढ़ावा चढ़ाकर झूमेंगे। तत्पश्चात टी.वी. चैनलों का निमंत्रण मिलने लगता है। चैनल पर आने के बाद इनकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती है। दूसरे चैनल वाले इन्हें अपनी टी.आर.पी बढ़ाने के लिए बुलाने लग जाते हैं। देखते ही देखते एक सामान्य सा इन्सान किसी को परमेश्वर बना देता है या उसका अवतार बन जाता है। लोग उसके सामने शीश झुका अपने मूल धर्म और शिक्षा को भूल जाते हैं।

– ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

जे. एन. यू. में बवाल – खड़े किए कई संगीन सवाल

रात को जाकर तब खत्म हुआ जब पुलिस ने हिरासत में लिए गए छात्रों को रिहा किया। छात्रों की ओर से कहा गया कि हमारा विरोध खत्म नहीं हुआ है लेकिन पुलिस द्वारा हिरासत में लिए गए छात्रों को रिहा किए जाने के बाद हम वादे के अनुसार कैंपस लौट रहे हैं। इस विरोध का भविष्य क्या होगा यह बाद में तय किया जायेगा।

असल में आज जेएनयू की बात आते ही दिमाग में सबसे पहले चरित्रहीनता और राष्ट्रद्रोह की बातें तैरने लगती हैं। वर्षों तक अच्छी शिक्षा के लिए ख्याति बटोरने वाला जेएनयू आज लोगों की नजर में लाल सलाम, देशद्रोह का अड्डा बना हुआ है तो इस बढ़ी फीस के विरोध में मार्च करने वाले छात्र लोगों की नजर में कोई खास महत्त्व नहीं रखते। लोगों को लगता है अगर फीस 300 से बढाकर तीन हजार भी कर दी जाये तो हमें इससे कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला। जेएनयू की ये छवि क्यों बनी, इसके लिए मीडिया जिम्मेदार है या छात्र? इसकी तह में जाना आज बेहद जरुरी है।

जेएनयू का पिछले कुछ सालों यदि अतीत देखा जाये तो लाल इंटों वाली, बिना पलस्तर की उन बिल्डिगों के पीछे जो हुआ उसे लेकर इतनी चर्चा हुई कि आज लोगों को जेएनयू शिक्षण संस्थान

से ज्यादा सेक्स और राजनीति का अड्डा नजर आता है। इसकी शुरुआत हुई साल 2009 में जब जेएनयू में साबरमती और ताप्ती हॉस्टल में रैगिंग को लेकर बवाल हुआ था। इस घटना से पहले तक जेएनयू की काफी इमेज सुरक्षित थी।

इसके बाद साल 2010 में छत्तीसगढ़ के दांतेवाडा जिले में माओवादियों द्वारा किये हमले में सीआरपीएफ के 76 जवान शहीद हो गये। इस घटना के बाद देशभर में गुस्से की तीव्र लहर दौड़ उठी थी तो वहीं कहा जाता है 'जेएनयू' में इस हमले के बाद 'जल्लोष' – खुशी का उत्सव शुरू हुआ था। इंडिया मुर्दाबाद, माओवाद जिंदाबाद' के नारे यहाँ के कुछ छात्र दे रहे थे। इससे जेएनयू का माहौल काफी गरम हुआ था।

इसके बाद जैसे देश में मोबाइल क्रांति का दौर आया तो इसी दौरान जेएनयू से एक सेक्स टेप वायरल हुआ था। कथित तौर पर जेएनयू के एक छात्र और छात्रा ने वहां के हॉस्टल में शारीरिक संबंध बनाये थे और उनका यह वीडियो कैंपस में वायरल हो गया। इसके बाद इंटरनेट पर जेएनयू सेक्स टेप सर्च लिस्ट में ऊपर आने लगा। एक प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी, जहां से स्कॉलर निकलते हैं और जहां पर लोग पढ़ना चाहते हैं, वहां से ऐसा टेप सामने आने से लोगों के लिए आश्चर्य और घृणा की बात बन गई।

इन दो घटनाओं के बाद लोगों की नजरों में जेएनयू की छवि बदलने लगी थी। देश की आम जनता ने इस बात को बिलकुल किनारे कर दिया। यह घटनाएँ महज एक अपराध थी कि किसी ने जवानों के बलिदान का जश्न मनाया या किन्हीं दो छात्र-छात्रा का वीडियो बनाया गया और उसे वायरल किया गया। जनता की नजर में ये घटनाएँ नैतिक अपराध बन गयी थीं। यह वह दौर था जब एमएमएस खूब बनते थे और फैलाये जाते थे। कैमरे वाले फोन तब सबके हाथों में नहीं पहुंचे थे और न ही इंटरनेट इतना सस्ता था।

इसके बाद दिसंबर 2012 में दिल्ली में निर्भया रेप के रूप में जघन्य कांड हुआ और दिल्ली के अन्य छात्र छात्राओं के साथ जेएनयू के छात्र-छात्राएं भी सड़कों पर उतरे। टीवी और सोशल मीडिया पर पुलिस और नेताओं से झगड़ती लड़कियां लोगों को नजर आईं। भले ही निर्भया के लिए लोगों के मन में सम्मान था पर एक पितृसत्तात्मक समाज को चिल्लाती-लड़कियां पसंद नहीं आईं। जेएनयू की लड़कियों को एक 'महिला' नहीं समझा गया और उन्हें एक पतित नारी के तौर पर देखा जाने लगा। क्योंकि इससे पहले जेएनयू वीडियो देश में घूम चुकी थी। उन्हें इस नजरिए से देखा गया कि जेएनयू की लड़कियां तो कम कपड़े पहनती हैं। सिगरेट भी पीती हैं और पुरुषों से झगड़ती भी हैं। उनके पुरुष मित्र भी हैं और वे उन्हें छोड़ भी देती हैं। ऐसी न जाने कितनी कहानियां धीरे-धीरे सोशल मीडिया पर फैलने लगीं।

इसके बाद एक ऐसी घटना घटी की जेएनयू का पूरा चेहरा ही बदल गया। साल 2014 में एक लड़के और लड़की के खुलेआम प्रेम का प्रदर्शन को जब हमारी समाज ने इसे भारतीय संस्कृति एवं नैतिकता से जोड़ा तो इस पर शर्मिंदा होने के बजाय उस जोड़े के पक्ष में जेएनयू के छात्र-छात्राएं उठ खड़े हुए और किस ऑफ लव प्रोटेस्ट के नाम सड़कों पर प्रेमी-प्रेमिकाएं एक दूसरे को चूमते नजर आए।

इस घटना ने भी जेएनयू के छात्र-छात्राओं की इमेज को पब्लिक के दिमाग में धूमिल किया। जेएनयू जो मुक्त विचारधारा के लिए जाना जाता था वह खुलकर वामपंथ के लाल किले के रूप में परिवर्तित हो गया। 2014 में ही नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद वामपंथ ने खुलकर खेलना शुरू किया और जेएनयू को एक विश्वविद्यालय के बजाय अपने राजनीतिक अड्डे के तौर पर इस्तेमाल करने लगा। इसके बाद साल 2016 में अफजल गुरु की फांसी की बरसी जेएनयू में मनायी गयी। देश विरोधी प्रदर्शन के दौरान जेएनयू के छात्र-छात्राओं पर टीवी चौनलों ने 'टुकड़े टुकड़े गैंग' होने का तमगा लगा दिया।

उसी साल जेएनयू के 11 अध्यापकों ने दि डेन ऑफ सेसेशनिसम एंड टेरोरिजम नाम से दौ सौ पृष्ठों का एक डाक्यूमेंट तैयार किया। इसमें कथित तौर पर बताया गया था कि कैसे जेएनयू में सेक्स और ड्रग्स की भरमार है। इंडिया टुडे की इस रिपोर्ट के मुताबिक प्रोफेसर अमिता सिंह ने कहा कि जेएनयू के मेस में सेक्स वर्कर्स का आना सामान्य बात है।

इस रिपोर्ट के आने के बाद जनता की सारी कल्पनाओं पर मुहर सी लग गई। इसके बाद कन्हैया कुमार फिर शेहला राशिद, उमर खालिद इत्यादि की तमाम तरह की तस्वीरें वायरल हुईं और जेएनयू की प्रतिष्ठा देशभर में गिर गयी। इसी दौरान सोशल मीडिया पर यहाँ तक कि खबरें चलीं कि मकान मालिक जेएनयू के छात्र छात्राओं को किराये पर कमरें देने से इंकार कर रहे हैं। कहने को अतीत में भले ही जेएनयू से कितने सरकारी अधिकारी और रिसर्चर निकले भले हो, इकॉनमिक्स में नोबल प्राइज लाने वाला इस संस्थान से निकला हो या यहाँ से देश के कई बड़े नेता निकले हों। लेकिन यह बीते दौर की बात हो गयी। आज वर्तमान में लोगों के जेहन में जेएनयू की इमेज में किसी पोर्न साइट और देशद्रोह के अड्डे से कम नहीं है। इसी का परिणाम है कि फीस वृद्धि के विरोध में सडक पर चिल्लाते छात्र छात्राएं लोगों की संवेदना नहीं बटोर पा रहे है।

– राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

आर्यों के देवी व देवता

स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ जब खेड़ा खुर्द (दिल्ली) का गुरुकुल चलाते थे तो सहदेव नाम का एक गठीला, परन्तु जड़बुद्धि युवक उनके पास रहता था। ब्रह्मचारी में कई गुण भी थे। ब्रह्मचारी में गुरुभक्ति का भाव बहुत था और व्यायाम की सनक थी।

गुरुकुल के पास एक धनिक कुम्भकार रहता था। उसे स्वामी वेदानन्द जी से बड़ी चिढ़ थी। चिढ़ का कारण यह था कि वह समझता था कि आर्य समाजी देवी-देवताओं को नहीं मानते। स्वामीजी चाहते थे कि इस व्यक्ति को आर्यसमाजी बनाया जाए, यह बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। जब ब्रह्मचारी भिक्षा के लिए निकलते तो यह कभी भी किसी को कुछ भी भिक्षा न देता। उसका एक ही रोष था कि आर्यलोग देवी-देवताओं को नहीं मानते। स्वामी वेदानन्दजी उसे बताते कि माता, पिता, गुरु, आचार्य, अतिथि आदि देव हैं, परन्तु ये बातें उसकी समझ में न आतीं।

एक दिन ब्र. सहदेव भिक्षा के लिए निकला। उसी धनिक कुम्भकार के यहाँ गया। उसने अपना प्रश्न दोहरा कर भिक्षा देने से इन्कार कर दिया। ब्रह्मचारी ने कहा, ''आर्यलोग भी देवी-देवताओं को मानते हैं।''

उसने कहा, स्वामी दयानन्दजी का लिखा दिखाओ। ब्रह्मचारी जी ने वैदिक सन्ध्या आगे करते हुए कहा, यह पढ़ो क्या लिखा है? 'ओ३म् शन्नो देवी' दिखाकर ब्रह्मचारी ने कहा देख 'देवी' शब्द यहाँ है कि नहीं। फिर उसने संस्कार-विधि से देवयज्ञ दिखाया तो वहाँ 'विश्वानि देव' पढ़कर वह धनिक दंग रह गया। उसने कहा, ''मुझे तो आज ही पता चला कि आर्यसमाज 'शन्नो देवी' तथा 'विश्वानि देव' को मानता है, परन्तु स्वामी वेदानन्दजी ने मुझे क्यों नहीं बतलाया?''

इस घटना के पश्चात् वह व्यक्ति दृढ़ आर्य बन गया। स्वामीजी का श्रद्धालु तथा गुरुकुल का सहायक बन गया।

यही ब्रह्मचारी आगे चलकर स्वामी अग्निदेवभीष्म के नाम से देशभर में वेदप्रचार के लिए घूमते रहे। इन्हें सहस्त्रों प्रमाण कण्ठस्थ थे। यह सूझ व लगन की बात है कि जो बात वेदज्ञ वेदानन्दजी महाराज को न सूझी, एक साधारण ब्रह्मचारी को सूझ गई और एक व्यक्ति का जीवन बदल गया।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
5,10, 20 किलो की पैकिंग)
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

22 मार्च, 2020 को आयोजित होगा ....

वर्तमान में किन्हीं कारणों से निष्क्रिय होते जा रहे हैं अथवा एकाधिपत्य के कारण गरिमा विहीन होते जा रहे हैं, उन सभी आर्य समाजों को लेकर न केवल चिंता व्यक्त की गई अपितु क्षेत्रीय कमेटी गठित करके उन्हें सक्रिय करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

9) वर्ष 2020 में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों में स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन का प्रस्ताव हुआ पारित। इसकी महत्ती आवश्यकता बताते हुए श्री महामंत्री जी ने कहा कि जब तक आर्य समाजों के पदाधिकारी अपने सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं से अपरिचित होंगे तब तक आर्य समाज का प्रचार-प्रसार और विस्तार सही मायनों में संभव नहीं हो पाएगा। अत: सभी सभासदों ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया।

दिल्ली सभा के द्वारा संचालित सेवा कार्यों का अवलोकन

इस अवसर पर सभा द्वारा चलाए जा रहे सभी महत्वपूर्ण 84 सेवा प्रकल्पों की पी.पी.टी. विधिवत दिखाई गई। इन सेवा कार्यों में सहयोग, महाशय धर्मपाल मीडिया सैंटर, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्पों पर विशेष रूप से फोकस रख कर विचार किया गया कि वर्तमान में हमें किसी तरह से आर्य समाज को गति प्रदान करनी है। सभा के सभी सेवा कार्यों को देखकर आर्यजनों में उत्साह की लहर दौड गई और सभी ने इन सेवा कार्यों की उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की।

महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी ने की सभा के सेवा कार्यों की प्रशंसा

सिक्किम के राज्यपाल महामहिम गंगाप्रसाद जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में सम्मिलित होकर अत्यंत प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा कि पहले मेघालय और अब सिक्किम में आर्य समाज के लिए लगातार कार्य कर रहा हूं। वहां डी.ए.वी. स्कूल के लिए भूमि का आबंटन हुआ है और मुख्यमंत्री ने घोषणा की है कि हम वहां हर जिले में गुरुकुल बनाने का कार्य करेंगे। आज आर्यसमाज की युग को आवश्यकता है। धर्म का सही स्वरूप और मानव समाज को दिशा देने के लिए आर्य समाज अत्यंत प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

महाशय धर्मपाल जी को अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रेषित सम्मान पत्र भेंट करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी। साथ में हैं सभा उप प्रधान - अरुण प्रकाश वर्मा, शिव कुमार मदान, ओम प्रकाश आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, मन्त्री-सुखबीर सिंह आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, कृपाल सिंह, प्रस्तोता सुरेन्द्र रैली एवं आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा व मन्त्री श्री एस. पी. सिंह।

डॉ. विवेक आर्य जी को आर्य महासम्मेलन अमेरिका का स्मृति चिह्न भेंट करते आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी एवं महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली एवं अन्य।

महाशय धर्मपाल जी का उद्बोधन

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ अपना संक्षिप्त और सारगर्भित उद्बोधन देते हुए कहा कि आज मेरा मन बहुत प्रसन्न है। मैं बहुत खुश हूं। जो कार्य आर्य समाज कर रहा है वह अपने आपमें अद्भुत है। इन सभी सेवा कार्यों को पूरा करने का मैं लगातार प्रयास करूंगा। आप सब मुझे आशीर्वाद दें।

श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सभी आर्य आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आपके अतुलनीय सहयोग और सेवा की एक ऐसी मिसाल बन गई है जो सारे विश्व में अनुकरणीय सिद्ध हो रही है। मैं आप सभी के साथ आर्य समाजों में बैठकर चर्चा करूंगा, जिससे हम आर्य समाज को ओर आगे बढ़ा सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के ओर से दिए गए सम्मान

आर्य जगत के युवा, उत्साही और समर्पित, निष्ठावान डॉ. विवेक आर्य जी, जिन्होंने अत्यंत लगन और मेहनत से सोशल मीडिया के द्वारा वैदिक विचारधारा को प्रचारित और प्रसारित किया है। महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस क्रम में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के अनन्त और अपार सेवाकार्यों के लिए उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया। बड़े ही प्रेम, सौहार्द के वातावरण में सभा संपन्न हुई। शांतिपाठ के बाद प्रीति भोज ग्रहण कर सभी आर्यजन अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान कर गए। ❑

महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के प्रशिक्षुओं को मिला महाशय जी का आशीर्वाद

संगठन को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे युवा प्रचारक - महाशय धर्मपाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव आर्य समाज के उत्थान और विस्तार के लिए प्रयास रत रहने वाली संस्था है। वर्तमान में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पूरे देश के कोने-कोने में और विदेशों में भी समस्त आर्य जगत को महसूस हो रही है। चारों तरफ देश की भोली-भाली जनता धर्म के नाम पर डर और प्रलोभन का शिकार होकर दु:ख, पीड़ा और संताप का ग्रास बन रही है। इस झूठे ढ़ोंग पाखंड़ और गुरुडम के खिलाफ आर्य समाज सदैव अपनी आवाज बुलंद करता रहा है। आधुनिक परिवेश में केवल वैदिक सिद्धांतों, मान्यताओं और परंपराओं का आर्यसमाजों की परिधि में वर्णन करने से कार्य चलने वाला नहीं है, क्योंकि संपूर्ण विश्व में अनेक अन्य संस्थाएं, संगठन अपने अपने मत और संप्रदायों के प्रचार प्रसार में पूरी तकनीकि सुविधाओं के साथ रात दिन लगे हुए हैं। इसलिए आर्य समाज को भी अपनी पूरी शक्ति के साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का विस्तार और प्रचार करना ही होगा। इसी भावना और कामना को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प की योजना का निर्माण किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारकों को प्रचार कार्य क्षेत्र में उतारने से पूर्व 2 सितंबर 2019 से आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रांगण में लगातार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रचारक प्रकल्प का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं से अवगत कराना है, साथ ही आर्य समाज के प्रचार कार्य के माध्यम से सक्रियता प्रदान करना, स्कूलों में वैदिक ज्ञान व शारीरिक व्यायाम द्वारा चरित्र निर्माण और आर्यवीर दल की शाखाओं का संचालन कर आज की युवा पीढ़ी को आर्यसमाज से जोड़ना, सुदिशा देना, गरीब परिवारों एवं झुगी-झोपड़ियों में जाकर यज्ञ करना इत्यादि है।

वैदिक धर्म प्रचारकों को बीच-बीच में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी अपना स्नेहिल आशीर्वाद और प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। 24 नवंबर 2019 को सभी धर्म प्रचारकों को एक जैसी वेशभूषा में देखकर महाशय जी ने प्रसन्नता व्यक्त हुए सभी को आशीर्वाद देते हुए अपने संदेश में कहा कि आप सब वैदिक धर्म प्रचार के लिए नित-निरंतर अपनी योग्यताओं को बढ़ाओ, दुनिया में जो अज्ञान और अविद्या का अंधेरा छाया हुआ है उसे दूर करके नया सवेरा लाना हमारा लक्ष्य और उद्देश्य है। हम इस कार्य में जरूर सफल होंगे। इसके लिए लगातार मेहनत करो, तुम्हारी मेहनत और प्रभु की रहमत जरूर रंग लाएगी। ❑

नार्वे में कुरान क्यों जला रहे है प्रदर्शनकारी?

पिछले कुछ दिनों से यूरोपीय देश नार्वे में इस्लाम के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहा है। लोगों का आरोप है कि नार्वे का इस्लामीकरण हो रहा है। इस्लाम के खिलाफ हुई रैली में एक व्यक्ति लार्स थोर्सन ने कुरान जला दी, जिसके बाद हंगामा शुरू हो गया। इसके बाद विरोध प्रदर्शन कर रहे गुट और इस्लाम समर्थक गुट के बीच जम कर झड़प हुई। ये घटना नार्वे के क्रिस्टियानालैंड की है। अजीब बात देखिये कि पुलिस ने ही इस्लाम विरोधी रैली की करने की इजाजत दी थी।

इंटरनेट पर वायरल हुए वीडियो में देखा जा सकता है कि जब थोर्सन कुरान जला रहे होते हैं, तब एक व्यक्ति उन पर अचानक से झपटता है और ऐसा करने से रोकता है। ये घटना 16 नवंबर, 2019 की है। प्रदर्शनकारियों ने कुरान की एक प्रति को जलाया गया और 2 अन्य पुस्तकों को कूड़ेदान में डाल दिया गया। इतना ही नहीं प्रदर्शनकारियों ने इस्लाम को हिंसा का मजहब बताते हुए पैगम्बर मुहम्मद के खिलाफ आपत्तिजनक नारेबाजी की है। नार्वे में मुस्लिम शरणार्थियों को लेकर हंगामा मचा हुआ है। नार्वे के कई लोगों का मानना है कि इस्लाम तानाशाही वाला मजहब है और जहाँ भी जाता है, वहाँ के लोकतंत्र और कानून की इज्जत नहीं करता।

नार्वे में इस्लाम के खिलाफ यह प्रदर्शन क्यों हो रहे है यदि इसके पीछे गहराई से विश्लेषण किया जाये तो सिर्फ नार्वे ही नहीं बल्कि पिछली अनेकों घटनाओं ने दुनिया के गैर मुसलमानों में ये एहसास ताजा कर दिया है कि इस्लाम का आतंक बाकी शेष दुनिया में बढ़ चुका है। पिछले तीन से चार साल की राजनीतिक घटनाओं ने इन सबमें बड़ी भूमिका निभाई है। नार्वे के आतंकवाद विशेषज्ञ थोमस हेगहामर अमेरिकी सरकार के सलाहकार रहे हैं उनके मुताबिक समय के साथ दुनिया के धर्मों ने भी विकास किया लेकिन ग्लोबल दुनिया में इस्लाम प्राकृतिक रूप से जगह नहीं बना पाया इस कारण वह असहज महसूस करता है और हिंसक हो जाता है।

देखा जाये तो आज यूरोप में मुस्लिम जनसंख्या तेजी से विस्तार कर रही है अगर यह संख्या बहुमत में हुई तो तब यूरोप के सामने तीन रास्ते ही बचते हैं, सद्भावनापूर्वक आत्मसातीकरण, मुसलमानों को निकाला जाना या फिर यूरोप पर इनका नियन्त्रण हो जाना, इन परिस्थितियों के सर्वाधिक निकट स्थिति कौन सी है यह यूरोपवासियों को सोचना होगा। लगातार हमलों और खूनी खेल की आहट अपनी देहलीज पर देख यूरोपवासी भी खुद को असहज महसूस करने लगे हैं। फ्रांस बेल्जियम, नार्वे, जर्मनी वेस्टमिंस्टर, मैनचेस्टर एरीना और लंदन में वाले हमलों के बाद लोगों ने खुलेआम मुसलमानों को कसूरवार ठहराना शुरू कर दिया है।

.....पिछले दिनों इस्लामिक धर्मगुरु उमर बकरी मोहम्मद ने कहा था "मैं ब्रिटेन को एक इस्लामी राज्य के रूप में देखना चाहता हूँ मैं इस्लामी ध्वज को 10 डाउनिंग स्ट्रीट में फहराते देखना चाहता हूँ।" या फिर बेल्जियम मूल के एक इमाम की भविष्यवाणी - "जैसे ही हम इस देश पर नियन्त्रण स्थापित कर लेंगे जो हमारी आलोचना करते हैं वो हमसे क्षमा याचना करेंगे, उन्हें हमारी सेवा करनी होगी, उनकी औरते हमारी रखैल होगी, तैयारी करो समय निकट है।" इन बयानों के बाद यूरोपीय लोग अब एक ऐसी स्थिति का चित्र बनाते नजर आते है जहाँ अमेरिका की नौसेना के जहाज यूरोप से यूरोपियन मूल के लोगों के सुरक्षित निकास के लिये दूर-दूर तक तैनात खड़े होंगे।....

पिछले कई सालों से यूरोपीय देशों में आम जनजीवन पर लगातार आतंकी हमले हो ही रहे थे, कि अचानक फ्रांस के चर्च में हुए एक हमले में पादरी की गला रेत कर हत्या ने पूरी दुनिया में खलबली मचा दी थी। इसमें हैरानी की बात यह थी कि ये हत्या स्कूल जाने वाले दो लड़कों ने की थी, जिनमें एक बार फिर चौकाने वाली बात यही सामने आई थी कि चर्च में पादरी का गला रेतने के बाद ये हत्यारे 'अल्लाहु-अकबर' चिल्लाते हुए भाग रहे थे। इस घटना को यूरोप को सीधे इसाई समुदाय की धार्मिक भावना पर भी हमला कहा जा सकता है।

दूसरा मुसलमान यूरोप को धर्मान्तरण और नियन्त्रण के परिपक्व महाद्वीप मानते हैं। पिछले दिनों इस्लामिक धर्मगुरु उमर बकरी मोहम्मद ने कहा था "मैं ब्रिटेन को एक इस्लामी राज्य के रूप में देखना चाहता हूँ मैं इस्लामी ध्वज को 10 डाउनिंग स्ट्रीट में फहराते देखना चाहता हूँ।" या फिर बेल्जियम मूल के एक इमाम की भविष्यवाणी - "जैसे ही हम इस देश पर नियन्त्रण स्थापित कर लेंगे जो हमारी आलोचना करते हैं वो हमसे क्षमा याचना करेंगे, उन्हें हमारी सेवा करनी होगी, उनकी औरते हमारी रखैल होगी, तैयारी करो समय निकट है।" इन बयानों के बाद यूरोपीय लोग अब एक ऐसी स्थिति का चित्र बनाते नजर आते है जहाँ अमेरिका की नौसेना के जहाज यूरोप से यूरोपियन मूल के लोगों के सुरक्षित निकास के लिये दूर-दूर तक तैनात खड़े होंगे।

घटनाक्रम और बयानों के बाद यूरोपी जनजीवन पर पैनी नजर रखने वाले प्रोफेसर थॉमस होमर-डिक्सन कहते हैं कि इस्लामिक शरणार्थी यूरोप के लिए चुनौती बड़ी है। क्योंकि ये मध्य-पूर्व और अफ्रीका के अस्थिर इलाकों के करीब है। यहां की उठा-पटक और आबादी की भगदड़ का सीधा असर पहले यूरोप पर पड़ेगा। हम आतंकी हमलों की शक्ल में ऐसा होता देख भी रहे हैं, अमरीका, बाकी दुनिया से समंदर की वजह से दूर है इसलिए वहां इस उठा-पटक का असर देर से होगा। जब अलग-अलग धर्मों, समुदायों, जातियों और नस्लों के लोग एक देश में एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे, तो झगड़े बढ़ेंगे। पश्चिमी देशों में शरणार्थियों की बाढ़ आने के बाद यही होता दिख रहा है। वहीं कुछ जानकारों का ये भी कहना है कि हो सकता है पश्चिमी सभ्यताएं खत्म ना हों, लेकिन उनका रंग-रूप जरूर बदलेगा। लोकतंत्र, उदार समाज जैसे फलसफे मिट्टी में मिल जाएंगे। चीन जैसे अलोकतांत्रिक देश, इस मौके का फायदा उठाएंगे। ऐसा होना भी एक तरह से सभ्यता का पतन ही कहलाएगा। किसी भी सभ्यता की पहचान वहां के जीवन मूल्य और सिद्धांत होते हैं अगर वही नहीं रहेंगे, तो सभ्यता को जिंदा कैसे कहा जा सकता है? यह आज यूरोपियन लोगों के लिए सबसे बड़ा सवाल है।

शायद इसी भय के कारण पिछले दिनों ऑस्ट्रिया के लोगों में शॉटगन खरीदने को होड़ सी मच गयी है। नार्वे में प्रदर्शन हो रहे है। न्यूजीलेंड की मस्जिदों में हमला सबने पिछले दिनों देखा ही था जिसमें 50 के करीब नमाजियों की हत्या कर दी गयी थी। अमरीका के राज्य टेक्सास में कट्टरपंथियों के एक गुट ने मुसलमानों के विरुद्ध हथियार लेकर रैली निकाली थी। पाकिस्तानी मूल के एक अमेरिकी दंपति नाजिया और फैसल अली को अमेरिका में विमान से उतार दिया गया था क्योंकि उनके ''अल्लाह'' कहने और फोन पर एसएमएस करने से विमान में सवार क्रू की एक सदस्य 'असहज' महसूस कर रही थी। इसके बाद गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक के अनुसार इस्लाम दुनिया का सर्वाधिक तेजी से बढता हुआ धर्म है चाहें यह बढ़ोतरी धर्मान्तरण के वजह से हो या जनसंख्या वृद्धि से! उपरोक्त सारी खबरें कहीं ना कहीं आपस में जुडी सी दिखाई दे रही हैं। ❑

कैलागढ़ (उत्तराखण्ड) में नव निर्माणाधीन आर्यसमाज का नीरिक्षण

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी देहरादून जिले में स्थित आर्यसमाज कैलागढ़ के निर्माणाधीन भवन का निरीक्षण करने के लिए पहुंचे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के उप प्रधान श्री ज्ञानचन्द आर्य जी एवं अन्य अधिकारियों के साथ श्री विनय आर्य जी ने पूरे आर्यसमाज भ्रमण कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आर्यजनों का उत्साहवर्धन किया और उत्तरखण्ड में आर्यसमाज के महापुरुषों द्वारा पूर्व समय में किए गए परोपकारी कार्यों की प्रेरणा देते हुए भविष्य में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभाने की बात कही।

Education Method and Plan

Principles of Education: After attaining the age of eight years, the boys and girls should be sent to Boys' and Girls' institutions respectively. It should be taken care of that none of the teachers is of bad character. Only those should be the teachers, who are really scholars and are religious in nature. The educated parents should send their respective wards after performing their respective sacrificial ceremonies to their respective institutes of learning, which should be located in unpopulated and lonely places. The institutes for boys and girls should be at least four to five kilometers apart and should employ only male and female teachers and workers, respectively.

Till they complete their studies, the students should observe celibacy, i.e., Brahmacharya, so that they could enhance their pleasures after attaining the best of education, knowledge, character, nature, physique and self. All the students should be provided with the same type of clothes, meals, beddings etc., irrespective of the financial or social status of their parents. All should learn to endure the hardships of life.

It should be legally and socially binding for the parents to send their wards for education. Those, who still keep their wards at home should be punished adequately. The first 'sacred thread' ceremony of the boys should be held by their parents at home, the second one should be performed at the school by the teachers. These sanctified puplils should be taught by the parent as well as by the teachers-the meaning of the famous Gayatri Mantra. Then they should be taught the different acts and performances attached with the prayers, i. e. Sandhyopasana. Then they should be taught to recite *Sandhya,* with all its different acts and aspects, like *Pranayama, Manasparikrama* etc., with Vedic Mantra prescribed for it. Such sacred prayers should be performed attentively in a lonely place. *Yajna* or Sacrificial fire-rite is another sacred and divine act. Both of the aforesaid acts, *Sandhya and Yajna* should be performed twice daily, in the morning as well as in the evening.

Types and Categories of Brahmacharya :

There are three categories of Brahmacharya : Highest Middle, and the Lowest. Age-limit for the Lowest is upto 24 years, for Middle upto 44 years, and for the Highest upto 48 years, Those, performing the Brahmacharya of th last order, can prolong their age upto full length, i. e. upto four hundred years of age.

This categorisation is based on the four stages of life. The first stage is that of *Growth,* in which all the physical elements grow between 16th to 24th year of age. The second one starts from 25th or 26th year of age and is known as *'Youth.'* The third stage is that of *'Completeness and perfection'* between 25th and 40th year of age, wherein all the physical elements grow to their full bloom. Fourth, after 40th year, is known as the age of declining, in which these physical elemens start overflowing and get wasted through different channels, after growing to their full limits. The fortieth is the better year for marriage; but if one wants the best, it is the 48th. Only those can remain Brahmacharis for the whole of their life, who have conquered all their sensuous feelings and leanings and have become Yogis. ***To be continued......***

With thanks By: "Flash of Truth"

लोक संघ सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा – 2019–20 की तैयारियों के लिए

महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान

www.pratibhavikas.org पर

ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019–2020 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। पंजीकरण करने के लिए इच्छुक प्रतिभावान छात्र–छात्राएं www.pratibhavikas.org पर लॉगइन करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें अथवा dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। – *व्यवस्थापक*

आर्यजनों से निवेदन है कि इस सूचना को अधिक से अधिक संख्या में अपने व्हाट्सएप्प ग्रुप, ट्वीटर हैंडल, फेसबुक, टेलिग्राम आदि सूचना माध्यमों से सोशल मीडिया पर प्रचारित प्रसारित करें, जिससे अधिक से अधिक प्रतिभावान छात्र–छात्राएं अपना पंजीकरण करा सकें और आर्यसमाज की निःशुल्क सेवा का लाभ प्राप्त कर सकें। – *महामन्त्री*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण

आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है, किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अतः भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15–हनुमान रोड़, नई दिल्ली–110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुनः दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली–110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। – ***महामन्त्री***

आवश्यकता है

आर्य अनाथालय व उससे सम्बन्धित संस्थाओं के निराश्रित/अनाथ बालक/बालिकाओं के आश्रम के लिए पुरुष व महिला संरक्षक (वार्डन), सेना से सेवानिवृत प्रशासनिक अधिकारी, पुरुष नर्स, सभागार प्रबन्धक व बिजली कर्मचारी की आवश्यकता है, जिसे सेवा कार्य में रूचि हो। उम्र 40 से 60 के बीच। नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य। भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। 10–12–2019 तक आवेदन भेजें।

सचिव, आर्य अनाथालय,
4844/24 अंसारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली–110002

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा।

– सम्पादक

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. में वैदिक प्रवचन एवं शंका समाधान

आर्य समाज ए.जी.सी.आर एन्कलेव द्वारा स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी के सानिध्य में 2 से 4 दिसम्बर 2019 तक यज्ञ, भजन, प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें 3 और 4 दिसम्बर को सायं 7:30 बजे से 9:30 बजे तक विशेष रूप से भजन, प्रवचनों के साथ शंका समाधान का कार्यक्रम निश्चित है।

– ***आर्य ओमप्रकाश भटनागर, मन्त्री***

आर्य समाज अमर कालोनी का 52वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली का 52वां वार्षिकोत्सव समारोह 13 से 15 दिसम्बर, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी विष्वंग जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ एवं श्री भानुपकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। महिला सम्मेलन 14 दिसम्बर को 12:30 बजे से एवं समापन 15 दिसम्बर को प्रात: 8 से 1:30 बजे तक आयोजित होगा। – ***ओम प्रकाश छाबड़ा, मन्त्री***

राष्ट्र रक्षा यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज सेक्टर 3, 4, 5, 6 एवं विजय विहार एवं बनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों से 1 दिसंबर 2019 को प्रात: 8 बजे पार्क नंबर 1 पॉकेट ए-2 सेक्टर 5 रोहिणी में राष्ट्र रक्षा यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाएं और धर्मलाभ प्राप्त करें।– ***सुरिंदर चौधरी, मंत्री***

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन-मन-धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001**' के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। – ***महामन्त्री***

आर्यसमाज के भजनों के संग्रह हेतु - आवश्यक सूचना

यह सर्वविदित है कि आर्य समाज के भजन सारगर्भित और भावपूर्ण होते हैं। इसके लिए भजनों के लेखकों और मधुर भजन गायकों को बहुत-बहुत बधाई। भजनों का आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य जगत् के सभी भाषाओं के भजनोपदेशकों और भजन लेखकों से अनुरोध है कि आप अपने मधुर भजनों की रिकार्डिंग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को ईमेल पर भेजकर वैदिक धर्म-संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसर में सहयोग प्रदान करें। दिल्ली सभा का प्रयास है कि विश्व भर में आर्य समाज के भजनोपदेशकों के भजनों को संग्रहीत कर सुरक्षित किया जाए जिससे आर्य समाज की आने वाली पीढ़ियां भी मधुर भजनों का श्रवण करें और प्रेरणा प्राप्त करके आगे बढ़े।

कृपया अपने भजन सीडी/डी.वी.डी/पैन ड्राइव के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें अथवा **9540045898 पर व्हाट्एप्प** करें। – ***महामन्त्री***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

58वां वार्षिक उत्सव संपन्न

आर्य समाज मन्दिर न्यु मुल्तान नगर द्वारा 20 से 24 नवम्बर तक 58वां वार्षिक उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी से आचार्या नंदिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा यज्ञ में वेद पाठ किया गया। दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य एवं परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. वेदपाल जी सहित कई विद्वानों ने प्रवचन तथा उद्बोधन दिए। – ***राजकुमार आर्य, प्रधान***

आर्य समाज कोटा, राजस्थान द्वारा विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम संपन्न

आर्य समाज महावीर नगर कोटा, राजस्थान द्वारा 17 नवंबर 2019 को आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री के ब्रह्मत्व में 101 कुण्डीय यज्ञ संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के अनेकानेक वरिष्ठ पदाधिकारियों सहित अर्जुनदेव चड्डा इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे। – ***आर.सी.आर्य, प्रधान***

20 नवंबर 2019 को आर्य समाज कोटा के द्वारा कैथुन के हॉट बाजार में कपड़े के थैले बांटे गए। यह कार्यक्रम प्लास्टिक के थैलों के स्थान पर कपड़े के थैले के प्रचलन को मजबूती देने वाला सिद्ध हुआ। इसमें डी.ए.वी स्कूल कोटा की प्राचार्या सहित आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुन देव चड्डा, आचार्य शोभाराम आर्य, राम नारायण कुसवाह इत्यादि मौजूद रहे।

21 नवंबर 2019 को डी.ए.वी स्कूल कोटा के विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री वितरित की गई और इस अवसर पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत हुए। स्कूल की लाईब्रेरी हेतु सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किया गया। इस कार्यक्रम में अर्जुन देव चड्डा सहित सभी क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, स्कूल की प्रिंसीपल, स्टाफ तथा बच्चे सम्मिलित रहे।

23 नवंबर 2019 को मधु स्मृति संस्थान ने श्री सूरत सिंह यादव ने अपने सुपौत्र का जन्मदिन निराश्रित बच्चों के बीच बिस्कुट, चिप्स और आईसक्रीम के साथ वस्त्र और जूते इत्यादि बांटकर मनाया। इस अवसर पर सभी क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी उपस्थित रहे। संस्थान की संचालिका बृजबाला जी ने सभी का धन्यवाद किया।

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी के पूर्व प्रधान, वरिष्ठ अधिकारी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर जी की धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा खट्टर जी का लगभग 80 वर्ष की आयु में दिनांक 23 नवम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सुभाष नगर शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 नवम्बर को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के सभागार में हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, मन्त्री श्री एस.पी. सिंह सहित अन्य अनेक आर्यसमाजों के एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों व सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। श्रीमती कृष्णा खट्टर जी अपने पीछे अपने पति, दो सुपुत्र एवं एक सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। श्रद्धांजलि सभा के अवसर पर खट्टर परिवार की ओर से दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा एवं अन्य संस्थाओं को दान राशि भी भेंट की गई।

श्रीमती पुष्पा आर्या जी को मातृशोक

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी की पूर्व सदस्या एवं आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी की सभासद श्रीमती पुष्पा आर्या जी की पूज्या माता श्रीमती धर्मदेवी गांधी जी का लगभग 90 वर्ष की आयु में 25 नवम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 26 नवम्बर को पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 28 नवम्बर को लक्ष्मी नारायण मन्दिर, गुरु हरकिशन नगर, पश्चिम विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 25 नवम्बर, 2019 से रविवार 1 दिसम्बर, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28-29 नवम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 नवम्बर, 2019

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु ओ३म् हमारे वीर विजयी हों।
आर्य वीर दल हरियाणा
के तत्वाधान में
विशाल आर्य वीर महासम्मेलन
दिनांकः-
30 नवम्बर व 1 दिसम्बर
(शनिवार-रविवार) 2019
स्थानः- आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल
सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष
डॉ0 स्वामी देवव्रत सरस्वती जी
की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।
स्वामी देवव्रत सरस्वती
(अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल ट्रस्ट)
इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। कृप्या सम्मेलन में पधार कर संगठन का परिचय दें।
-: निवेदक :-
उमेद सर्ना संचालक | वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री | करणसिंह आर्य कोषाध्यक्ष | जगदीश चन्द्र आर्य मण्डलपति | धर्मवीर आर्य मन्त्री | पवन कुमार आर्य संयोजक | सत्यदेव चौधरी स्वागताध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा
सम्पर्क सूत्रः- 94675-56404, 94662-92625, 72064-76398

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज का आधिकारिक फेसबुक पेज
@thearyasamaj
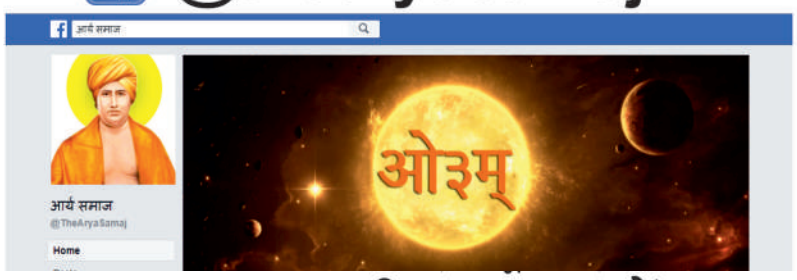

Like अभी लाइक करें

खुशखबरी! खुशखबरी!!
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2020 का
कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा
200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह